तुम बच्चे लड़ाई के मैदान में हो। किसके साथ लड़ाई है। पांच विकारों रूपी माया पर जीत पानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। भारतवासियों को तो जरूर ही दैवी राजधानी का वर्सा चाहिए। राजधानी थी, अब नहीं है। कहां गई वो फिर बाप बैठ समझाते हैं। शास्त्र सभी हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान तो नहीं है ना। ज्ञान सिर्फ एक रुहानी बाप में ही है। उसको ही रुहानी ज्ञान कहा जाता है, जो कि सुप्रीम रूह आकर पढ़ाते हैं। अपने को आत्मा समझ कर बैठो। हम आत्मा ही आकर शरीर से पार्ट बजाते हैं। मनुष्य यह नहीं जानते। सतयुग में सिर्फ भारत ही था। और कोई धर्म न था, न कोई और खंड था। भारतवासी देवताएं कितना साहुकार थे। फिर क्या हुआ?बाप बच्चों को समझाते हैं। सभी कहते हैं हम पतित हो गए हैं। पतितों को पावन बनाने वाला आओ। आत्मा जानती है यह पतित शरीर है। मैं भी पतित हूं। बुलाते भी हैं लिबरेटर आकर लिबरेट करो। आकर गाइड बनो। कब आकर लिबरेट करेंगे यह नहीं जानते। अपनी2 भाषा में बुलाते रहते हैं कि आकर लिबरेट करो,गाइड बनो। शांतिधाम ले जाओ ;क्योंकि शांतिधाम–सुखधाम ले जाने वाला एक ही बाप है। अभी हम सुखधाम जावेंगे वाया शांतिधाम। यह है दुःखधाम। तुम जानते हो अभी हम घर जा रहे हैं। वह है हम आत्माओं का रहने का घर जिसको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा जाता है। आत्मा क्या है,कैसे जावेंगे,क्यों भटकती है यह तुम जानते हो। मनुष्य तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। अभी तुम सब कुछ जानते हो। आस्तिक भी बने हो फिर त्रिकालदर्शी भी बने हो। अभी तुम धन(धनी) के बने हो। धन से स्वर्ग का वर्सा भी लेते हैं। बाप सिर्फ कहते हैं हे आत्माएं अपने बाप को याद करो। देह को याद न करना है। तुम बिगर देह हो। फिर देह में आकर पार्ट बजाया। अब फिर विदेही आत्मा अपन को समझ यह याद में रहना बहुत ईजी भी है फिर डिफिकल्ट ते डिफिकल्ट भी है। दैवी गुण भी धारण करो। लड़ाई–झगड़ा बिल्कुल न करो। सतगुरू के निंदक ठौर न पावे। बाप,टीचर,गुरू तीनों की निंदा कराते हो तो फिर ठौर पाय न सकेंगे। पिछाड़ी में यह भी सा. होगा। इतना तुमको समझाया फिर भी भूलें की। पहले नम्बर में है देहअभिमान,फिर और विकार है बाल–बच्चे। अच्छा,ओम।

रात्रीक्लास– 5–8–67– सन्यासी कब हाथ नहीं जोड़ेंगे ;क्योंकि समझते हैं हम पवित्र हैं और यह अपवित्र हैं। अपवित्र को पवित्र हाथ कैसे जोड़ेंगे?बाप कहते हैं मुझे बुलाया है कि पतित को पावन बनाने लिए आओ। मैं तो हूं ही पावन। अब यह हाथ जोड़ते हैं तो मुझे भी हाथ जोड़ना पड़े। देवतायें पावन हैं। वह किसको कब हाथ नहीं जोड़ेंगे। बाबा को सभी को हाथ जोड़नी पड़ती है। विकारी हाथ जोड़ते हैं तो रिटर्न में हाथ जोड़ना पड़े। नहीं तो समझेंगे यह रिटर्न में रेसपांस नहीं करते। तो हाथ जोड़ना ही पड़े। हाथ इनको जोड़ते हैं तो इनको भी जोड़ना पड़े। इनकी आत्मा तो पवित्र नहीं है। शिवबाबा की आत्मा पवित्र है। यह पवित्र बन रहे हैं। पावन आत्मा को पावन शरीर चाहिए। बाप कहते हैं मुझे पावन शरीर कहां से मिलेगा जिसमें प्रवेश करूं?पतित दुनियां में हैं ही सभी पतित। पावन दुनियां में तो मैं आता नहीं हूं। मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है कि पतित शरीर,पतित दुनियां में आता हूं। यह भी समझते हो कलियुग से सतयुग जरूर बनना है। बाप रचता है तो रचना जरूर नई दुनियां के करेंगे। फिर पुरानी दुनियां होती है ड्रामाप्लैनअनुसार। बच्चे जानते हैं हमारे सुख के दिन आ रहे हैं। अब जल्दी जावेंगे ;परंतु अभी सम्पूर्ण कहां बने हो। जब विनाश होगा मूसलाधार बरसात पड़ेगी,रक्त की नदी बहेगी तब तुम खुश होंगे कि अब हम नई दुनियां में जावेंगे। बाप भी जावेंगे तब जब पवित्र बनेंगे ;क्योंकि शांतिधाम में सभी आत्माएं पवित्र रहती हैं। विनाश होगा तो समझना चाहिए कि राजधानी पूरी स्थापन हो गई। राजाई पूरी स्थापन हुई है जरूर। बम छोड़ेंगे, अर्थक्वेक होंगे उस समय तुमको सा.होती रहेगी। खुशी होगी। समझेंगे अब हम चलें। याद से ही शक्ति मिलेगी। विकार में जाते रहेंगे तो और ही गिर पड़ेंगे। देखना चाहिए कोई आसुरी कार्य तो नहीं करता हूं। दैवी गुणों का भी चार्ट, (याद) का भी चार्ट रखो। फिर समझ सकते हो हम लक्ष्मी के वरने लायक हैं?डिनैस्टी है ना। पुरुषार्थ करना चाहिए।

जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही उंच पद पावेंगे। सुबह वा शाम को हर एक से पूछना चाहिए कि आज कोई को दुःख तो नहीं दिया है। कोई अकर्तव्य कार्य तो नहीं किया है। बेकायदे काम तो नहीं किया है। पूछकर फिर समाचार देना चाहिए। जो भी सैन्टर्स पर हैं उनको हर रोज कचहरी करनी चाहिए। कितना याद की यात्रा में रहे। फिर राय देनी चाहिए। जैसे चारों धामों की यात्रा करते हैं ना। तुम्हारी यात्रा तो रोज ही है जब तक कि वहांपर जाकर पहुंचो। तुम्हारी तो एक ही तरफ की यात्रा है। सो भी बुद्धि की ही है। उठते–बैठते,स्नान करते बाप को याद करना है। तुमको तो सिर्फ अंदर में ही याद करना है। याद दिल में ही हो ,मुख से तो बोलना भी नहीं है। बाबा की याद हो तब प्राण तन से निकलें। और किसी की याद आई तो नापास। देह सहित ही देह के सभी सम्बंध तोड़ने हैं ना। बेहद का सन्यास कर शांतिधमा–सुखधाम को याद करना है। हम तो वहां के ही रहने वाले हैं। हम तो शांतिपूर्ण विश्व के मालिक हैं। अब चक्र पूरा होता है। हम घर जावेंगे। फिर आकर विश्व का मालिक बनेंगे। अंदर में खुशी रहनी चाहिए। दुनियां भर में कोई भी ऐसा पढ़ाते नहीं हैं। यह तो पढ़ाई की पढ़ाई है। सतसंग का सतसंग ह। सत का संग तारे, कुसंग बोड़े। अब खुशी रहनी चाहिए कि हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हैं। अभी हम राजाई में जा रहे हैं। अभी तो राजाई नहीं है ना। माया अपोजिशन करती है तो वो खुशी नहीं रहती है। भक्तिमार्ग में यह मंदिर आदि (बनते) हैं तो कितना खर्चा आदि करते हैं। कितना बड़ा गपोड़ा मारते हैं कि इतने2 हजार वर्षों की यह पुरानी चीज है। बाप कहते हैं कि 5000वर्ष से पुरानी कोई वस्तु हो नहीं सकती है। वो तो लाख वर्ष की पुरानी भी कह देते हैं। तुम कितने मुंझे हुए थे। तुमको ही अब बाप समझदार बना रहे हैं। बाप जानते हैं कि बच्चे भक्ति कर करके बहुत (थके) हुए हैं। इनके हाथ–पांव दबाने चाहिए। हम थोड़े ही थके हैं जो कि हमारे हाथ–पांव दबाते हो। द्रौपदी के भी पांव आदि दबाते थे ना। अपने पदम भाग्य की अंदर ही अंदर सराहना करो। बाप कहते हैं कि तुम अपने 84जन्मों को नहीं जानते हो। मैं ही बताता हूं। बाप से हम अपना राज्य भाग लेते हैं। विश्व में भारत का राज्य था। अब तो वो देवताओं की नहीं है। धर्म कर्म भ्रष्ट हो गए हैं। अब हम फिर सो देवी देवता बन रहे हैं। खुशी होनी चाहिए ना। बाप,टीचर,गुरू की याद क्यों नहीं होनी चाहिए?माया तो इतनी जबरदस्त है जो कि याद भुला देती है। दिलवाला मंदिर तो देखो तुम्हारी ही यहां पर यादगार है ना। वंडर है ना। हम तो हैं चैतन,वो है जड़। अभी तुमको पता पड़ा है कि यह तो हमारा ही यादगार बना हुआ है। तुमको भी मंदिर देखकर बहुत खुशी होती होगी। बच्चों को तो आपस में बहुत प्रेम से रहना चाहिए। देवताओं से भी जास्ती तुम ब्राह्मणों की महिमा है। तुम तो सभी को देवता बनाते हो ना। बाप तो सुखदाई है ही,तुम बच्चों को भी बनना है। बाप तो सभी को सुख देने वाला है ना। तुम भी सबको सुख ही दो। मंसा,वाचा,कर्मणा कोई को भी दुःख नहीं देना है। तुम जानते हो कि यह देवतायें ही भारत में श्रेष्ठाचारी थे। कितने तो मंदिर ही हैं। कितने देवताओं की पूजा होती है ;परंतु जानते तो किसी को भी नहीं हैं ना। जो देवी देवताएं थे उनको ही गॉड गॉडेज कहते हैं। कोई ने तो उनको ऐसा बनाया ही होगा ना। तो शिवबाबा ने ही उनको बनाया है। तुम भी कहते हो कि हम यह बनेंगे। तो फिर श्रीमत पर चलना पड़ेगा ना। उसके लिए तो फिर अच्छी रीति पढ़ना होता है। तुम बच्चों को तो पढ़ाई का कितना नशा रहना चाहिए। विश्व का मालिक बनते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा पढ़ाते हैं दादा.....तो इतने उंच ते उंच से जो पढ़ाई पढ़ते हो तो उसको तो कितना नशा रहना चाहिए। अभी हम भी गुण धारण कर रहे हैं ;क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है ना। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। विकारों में जाने वाले को तो बाबा की याद भी नहीं,तो खुशी भी नहीं रह सकती है। गुडनाइट।